सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कसौटी पर दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजना (दीन दयाल उपाध्याय के विचारों के संदर्भ में)

डॉ० सुरजीत सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग
बी०एस०एम०पी०जी० कॉलेज
रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
ईमेलः surjeetsinghap@gmail.com

डॉ० (प्रो०) गौतम वीर
प्राचार्य
बी०एस०एम०पी०जी० कॉलेज
रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
ईमेलः gautamveer78@gmail.com

सारांश

विश्व में जितने भी राष्ट्रों की स्थापना हुई है उनका आधार आर्थिक या फिर राजनीतिक रहा है। जिसने विश्वभर के राष्ट्रों के बीच युद्ध, वैमनस्य, द्वेष, प्रतिद्वन्द्विता आदि को ही बढावा दिया है। वास्तव में इन राष्ट्रों की स्थापना का यह कृत्रिम आधार विश्व में सहयोग, शान्ति, समंवय, और भाईचारा लाने में असफल रहा है। भारत की मूल संस्कृति की अपनी विशेषताओं के कारण पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत को एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में स्थापित करना चाहते थे। जिसका मूलमंत्र सामाजिक न्याय एवं समग्र विकास है। हमने अपने शोध अध्ययन में इन प्रतिमानों के आधार पर दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजना का परीक्षण कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि हम आज सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उद्देश्यों की तरफ कितना गतिमान हो चुके है और इस दिशा में कितना कार्य किया जाना शेष है। जिससे भारत को स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्ध, सम्पन्न और सशक्त राष्ट्र बनाया जा सके। इस शोध पत्र के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कसौटी पर कहाँ तक खरी उतरती है।

मुल बिन्दु

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, युवा, अंत्योदय।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 12.08.2022
Approved: 16.09.2022

डॉ० सुरजीत सिंह,
डॉ० (प्रो०) गौतम वीर
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कसैटी पर दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजना (दीन दयाल उपाध्याय के विचारों के संदर्भ में)

RJPP Apr.22-Sept.22,
Vol. XX, No. II,
pp.288-292
Article No. 37

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-2

प्रस्तावना

सदियों की संस्कृति के ताने बाने में गुंथे भारत राष्ट्र के लिए हमेशा जन ही महत्वपूर्ण रहा है। लोगों को एक माला में गूंथने का कार्य कर रही है भारतीय संस्कृति। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मूलभूत सिद्धान्त हैं–**वसुधैव कुटुम्बकम** । भारतीय संस्कृति का यह वैचारिक आधार इतना ठोस एवं समन्वयकारी है कि यह भारत समेत सम्पूर्ण विश्व को आपस में जोड़ने की सामर्थ्य रखता है। राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक एकता, हमारी राष्ट्रीय पहचान तथा सभ्यतामूलक आधार के साथ–साथ हमार चरम जीवन मूल्य भी संस्कृति ही है। राजनीतिक दृष्टि से बँटा होने के बावजूद भी सांस्कृतिक दृष्टि से पूरा भारतवर्ष एक देश है। विष्णुपुराण के अध्याय 3 में लिखा है कि

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्ष तद् भारते नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

अर्थात् समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में जो देश है, उसका नाम है भारतवर्ष, जिसकी सन्तान भारती के नाम से प्रसिद्ध है अथवा जहां भरत की सन्तति का वास है। भारत की संस्कृति में अंतर्निहित मूलभूत तत्व एकता ही है, जो राजनैतिक प्रभुता से ज्यादा शक्तिशाली है। यह एकता जाति, धर्म, वंश, रंग, भाषा एवं रीति–रिवाज की तमाम विभिन्नताओं को स्वीकार नही करती है।

अंग्रेजी शासनकाल में राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, श्री रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द सरस्वती, श्री अरविन्द आदि महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को उभार कर और विकृतियों को नकारकर पुनः देश में सांस्कृतिक चेतना का संचार किया था। हमारी देशभक्ति अपने राष्ट्र एवं सम्पूर्ण जन समाज के प्रति एक ममत्व भाव के कारण है और यह भाव एकात्मत्व का परिणाम है। पं. दीनदयाल कहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विशेष प्रकृति होती है, जो ऐतिहासिक और भौगोलिक नहीं अपितु जन्मजात होती है, जिसे वह चित्ति कह कर संबोधित करते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय का मानाना था कि भारतवर्ष की एकता का प्रमुख आधार उसकी संस्कृति ही है। इसी कारण से पंड़ित जी भारत के राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते थे। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर का कोई अर्थ नहीं है उसी प्रकार संस्कृत से अलग देश का कोई अर्थ नहीं हैं। उनका मानना था कि राष्ट्ररूपी वृक्ष को जो जीवन से मिलता है, वह उसकी जड़ों तक पहुँचना चाहिए। जब जड़े मजबूत होगी तो हमें राष्ट्ररुपी वृक्ष के तने, टहनियों, फलों, फूलों, शाखाओं जैसे अन्य घटकों की चिंता करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति मूलतः एकात्म मानववादी है। धर्म और चिति इसके महत्वपूर्ण अवयव हैं। पं0 जी ने हमेशा ही इस बात का विरोध किया कि आजादी के पश्चात् भारत विदेशी विचारों का अनुशरण करे। वह कहते थे कि पाश्चात्य मॉडल को अपनाने से अनेक प्रकार की समस्याऐं पैदा होगी। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए उन्होंने विश्व के राजनैतिक परिवेश एवं भारतीयता को ध्यान में रख कर एकात्म मानववाद का प्रतिपादन किया। इस वैचारिक व्याख्या को निर्मित करने का उद्देश्य मानव कल्याण था।

प्रत्येक देश की अपनी परिस्थितियां, अपनी ऐतिहासिकता एवं अपनी सामाजिकता होती है। अतः इन्ही सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए देश को प्रगति पथ पर अग्रसर होना चाहिए। समाज का सर्वांगीण विकास तभी होगा जब सभी दरिद्रता से दूर रहे और उनको उनकी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार रोजगार के अवसर मिलें, जिससे प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

भूमंडलीकरण ने एक ओर जहां व्यक्ति को आर्थिक विकास का स्वतंत्र आयाम दिया है तो वही दूसरी ओर बढती असमानता, बरोजगारी, मानसिक अवसाद, व्यक्तिवाद आदि ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समंवयकारी दृष्टिकोण को भी चोट पहुंचा रहा है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रबलता प्रदान करने के लिए वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार लोक कल्याण की नीतियां अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को रोजी–रोटी प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम संचालित कर रही है। जिसमें से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हाशिये पर खड़े व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक बेहतरी के लिए निशुल्क कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर निश्चित रूप से रोजगार को उपलब्ध करवाया जाता है। दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन पं. दीन दयाल उपाध्याय की विचारधारा की कसौटी पर कितना खरा उतरती है इसको निम्न आधारों पर समझने का प्रयास किया जायेगा।

उद्देश्य एवं शोध विधि

इस शोध का उद्देश्य उन तथ्यों का विश्लेषण करना है कि दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, पंडित दीन दयाल उपाध्याय के ग्राम विकास की कसौटी पर कितनी खरी उतरती है।

अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोत्रों पर आधारित है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों एवं प्रधानमंत्री जन धन योजना कार्यक्रम के अध्ययन हेतु अनेक शोध लेखों, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रयोग किया गया है। समंको के विश्लेषण हेतु एम.एस.वर्ड एवं एक्सेल का प्रयोग किया गया है।

नये क्षितिज की ओर बढता भारत

भारत के शहरी क्षेत्रों में हाशिये पर रहने वाले लोगों की अनौपचारिक क्षेत्रों पर अधिक निर्भरता है। जिससे वह अनिश्चित आजीविका एवं अच्छी कार्य दशाओं के न होने के कारण सामाजिक बहिष्कार और खतरनाक पर्यावरणीय स्थितियों का सामना कर रहे हैं। दीन दयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन का उद्देश्य हाशिए पर खड़े लोगों को लोगों को राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करना है। यह योजना शहरी गरीब परिवारों की गरीबी को कम करने के लिए एवं उनको लाभकारी स्वरोजगार और कौशल विकास के द्वारा रोजगार के अवसरों तक पहुंचने में सक्षम बनाती है। इस योजना का उद्देश्य शहरी बेघरों को आवश्यक सेवाओं के साथ आश्रय भी प्रदान करना है। यह शहरी पथ विक्रेताओं को संस्थागत ऋण, उपयुक्त स्थान, बाजार के अवसरों तक पहुंचने के लिए कौशल और सामाजिक सुरक्षा की सुविधा प्रदान करके उनकी आजीविका संबंधी चिंताओं को कम करती है। पंड़ित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों के अनुरूप अंतिम पायदान पर खडे व्यक्ति की क्षमताओं को उजागर करने के लिए उसके कौशल का विस्तार करके वित, सम्पत्ति और उद्यमों तक पहुंचने के लिए पर्याप्त क्षमता प्रदान करना है। इसके लिए इस योजना का मजबूत संस्थागत मंच गरीबों को उनकी मानवीय, वित्तीय, सामाजिक एवं अन्य परिसंपत्तियों के निर्माण में सहायता करता है।

निम्न बिंदुवार यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि यह योजना पं. दीन दयाल उपाध्याय की विचारों की कसौटी पर किस प्रकार से खरी उतरती है :

- यह योजना शहरी आबादी के कमजोर वर्गो जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों, विकलांग व्यक्तियों, घरेलू कामगारों आदि पर विशेष रूप से फोकस करती है।
- कौशल प्रशिक्षण और नियोजन के माध्यम से शहरी गरीबों को बाजार की कौशल मांग के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, ताकि वह अपना स्वरोजगार उद्यम स्थापित कर सके अथवा सुरक्षित वेतनभोगी रोजगार प्राप्त कर सके।
- इस कार्यक्रम शहरी गरीबों को सेवा क्षेत्र, विनिर्माण और छोटे व्यवसाय, जिनकी स्थानीय मांग अधिक होती है, से संबंधित छोटे उद्यमों की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करता है।
- अधिक दिनों तक रोजगार में संलग्न रहने की इच्छा एवं अधिक आय के लिए इन महिलाओं में बच्चों की संख्या को लेकर भी सजगता बढी है। शिक्षा के महत्व को समझते हुए अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलवाने हेतु अधिक तत्पर रहती है।
- दीन दयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन का लाभ लेने के लिए हर एक व्यक्ति के पास अपना पहचान पत्र और आधार कार्ड है। जिससे इस योजना का लाभ सीधे उसके खातें में पहुंचता है।
- दीन दयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर में गुणवत्तापूर्ण सुधार हुआ है।
- दीन दयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के अंतर्गत सीमित आय वर्ग एवं निर्धन वर्ग को बहुत कम लागत पर आवास, स्वच्छ पीने का पानी, बिजली, कौशल प्रशिक्षित कर बेहतर रोजगार उपलब्ध करवाया जा रहा है।

स्पष्ट है कि दीन दयाल अंत्योदय राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के द्वारा मोदी जी की सरकार पं. दीन दयाल उपाध्याय के स्वप्न को साकार करते हुए सामाजिक न्याय एवं समग्र विकास हेतु अग्रसर है। जिससे लोगों में सहभागिता, प्राकृतिक संतुलन, लैंगिक समानता, शिक्षा आदि आयामों में संतुलन के द्वारा भारत को स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्व, सम्पन्न और सशक्त राष्ट्र बनाया जा सके। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की परिकल्पना को साकार करने के लिए मोदी सरकार विकास की दौड में पिछड़े लोगों को साथ लेकर चलने की प्रतिबद्वता के कारण ही अगले चुनाव में भी मोदी सरकार की जीत सुनिश्चित है। यद्यपि इस दिशा मे हम बहुत लंबा सफर तय कर चुके है और अभी बहूत लंबा सफर तय किया जाना शेष है।

संदर्भ

1. Kulkarni, S. A., Upadhyaya, Pandit Deendayal. (1989). Ideology and Perception: Integral Economic Policy. Suruchi Prakashan. Pg. **105.**
2. Uppadhyaya, Manjula. Economic Tought of Deen Dayal Uppadhyay. *International Journal of Innovative Social Science & Humanities Research*. Vol VI. Issue 9. July-Sept.
3. शर्मा, महेश चंद्र. (2016). दीनदयाल उपाध्यायः सम्पूर्ण वाड्मय. खंड छह. प्रभात प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **20–25.**
4. शर्मा, महेश चंद्र. (2016). दीनदयाल उपाध्यायः सम्पूर्ण वाड्मय. खंड नौ. प्रभात प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **77–79.**

5. शर्मा, महेश चंद्र. (2016). दीनदयाल उपाध्यायः सम्पूर्ण वाड्मय. खंड ग्यारह. प्रभात प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **17–19.**
6. Raje, Sudhakar. (ed.) (1972). "Life is outline" in Pandit Deendayal Upadhyaya: A Profile. Deendayal Research Institute: New Delhi. Pg. **7.**
7. Kaur, H., Singh, K. N. (2015). Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (Pmjdy): A Leap towards Financial Inclusion in India. *International Journal of Emerging Research in Management &Technology*. 4 (1). Pg. **25-29.**
8. Agarawal, Singhal., Swarup. (2015). Prospering India Economy through expansion of financial inclusion. scheme: - With special Reference to PMJDY. Advance in economics and management P-ISSN 2394-1545. e ISSN: 2494-1553. Volume 2. issue 12. Pg. **1169-1173.**
9. Shettar. (2016). Pradhan Mantri Jan Dhan Yoajan: - Issue and Challenges. *Journal of Business and management*. Vol-8. Issue-2. Ver-IV. Pg. **17-24.** e-ISSN: 2278-487X, P-ISSN 2319-7668.
10. (2014). Government of India. "Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana - A National Mission on Financial Inclusion". Department of Financial Services. Ministry of Finance: New Delhi.
11. http://financialservices.gov.in/banking/PMJDY%20BROCHURE%20Eng.pdf.
12. https://www.deendayalupadhyay.org/nationhood.html.
13. https://deendayalupadhyay.org/sol.html.